Dr. Keerti Kumar
Asstt Prof. (Guest)
Dept of Psychology.
S.R.A.P. College, Bara Chakia (East Champaran)
(A Constituent Unit of B.R.A. Bihar University MFA)

Subject Psychology
Topic — Statistics
Class — B.A. Part II Paper - III
Day — Thursday
Date. 24/02/2022
Period. 3rd
Contact No — 7821466117/6202215708

प्रश्न :- बहुलक से क्या अभिप्राय है? उसे किस प्रकार ज्ञात किया जा सकता है?

उत्तर :- बहुलक उस समंक को कहते हैं जो श्रेणी में सबसे अधिक बार आता है अथवा जिसमें सबसे अधिक आवृत्ति पाई जाती है।

फ्रान्सटन एवं फ्राउडन के अनुसार - एक समंक वितरण का बहुलक वह मूल्य है जिसके निकट श्रेणी की इकाइयाँ सबसे अधिक केन्द्रित होती हैं। उसे मूल्यों की श्रेणी की सबसे अधिक प्रतिरूप माना जाता है।

इसे सबसे अधिक आवृत्ति वाला, सबसे अधिक अंकों से केन्द्रीकृत आवृत्ति या सबसे अधिक प्रचलित अंक भी कहा जाता है। इसका प्रयोग जनता की मांग का अनुमान लगाने के लिए अन्य वस्तुओं के उत्पादन के सम्बन्ध में किया जाता है। जैसे Liberty, Harvest, Tones, Arisho, आदि कम्पनीयाँ ऐसे वस्त्रों की माप को ही निर्माण करती हैं। जिसके माप साधारण सभी को उपयुक्त हो।

बहुलक के लाभ :-

① सर्वोत्तम प्रतिनिधित्व :- बहुलक, समंक श्रेणी के वह मूल्य है जो सबसे अधिक बार प्रयोग में आया हो अतः वह समूह का सबसे अधिक प्रतिनिधित्व करने वाला समंक होता है।

(2) चरम मूल्य तथा न्यूनतम मूल्य के प्रभाव से मुक्त :- प्रत्येक किसी समक श्रेणी के अत्यधिक अथवा न्यूनतम अंकों से प्रभावित नहीं होता है।

3. विन्यास द्वारा निर्धारण :- विन्यास के प्रदर्शन द्वारा कृषिकों को ज्ञात किया जा सकता है।

4. सरलता व लोकप्रियता :- बहुलक को ज्ञात करना सभी रीतियों से सरल है। इसका प्रयोग सर्वाधिक मात्रा में किया जाता है।

5. कुछ पदों के अभाव में बहुलक का निर्धारण सम्भव है :- बहुलक की श्रेणी के कुछ पदों की आदर्शपूर्ति में भी मालूम किया जा सकता है। बशर्ते की ये छूटे हुए पद बहुलांक वर्ग में न आते हैं।

6. व्यापारिक दृष्टिकोण से लाभदायक :- व्यापारिक दृष्टिकोण से बहुलांक अत्यधिक उपयोगी है। क्योंकि बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ ऐसे ही वस्तुएँ बनाती हैं जो बहुलांक पर आधारित हैं। उदाहरणार्थ जूते बनाने वाली कम्पनियाँ ऐसे जूते तैयार करती हैं जो अधिकतर व्यक्तियों के लिए उपयोगी हो सके।

बहुलांक के दोष :-

(1) बीजगणितीय प्रयोग सम्भव नहीं :- इसकी गणना आवृत्तियों के आधार पर ही सम्भव है। अतः इसका बीजगणितीय प्रयोग सम्भव नहीं है।

(2) अनिश्चित केन्द्रीय प्रवृत्ति का सूचक है :- यदि किसी पदमाला या श्रेणी में सभी पदों की आवृत्ति एक समान है तो बहुलांक का निश्चय करना सम्भव नहीं है। कभी-कभी एक ही श्रेणी में दो-दो अथवा तीन-तीन बहुलांक होते हैं। अतः यह कहना उपयुक्त होगा कि बहुलांक केन्द्रीय प्रवृत्ति का निश्चित सूचक नहीं है।